Indian J. Soc. & Pol. 10 (01) : 121-124: 2023 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
First Published Online 31 JANUARY 2023 **ISSN: 2455-2127 (ONLINE)**

भारत की विदेश नीति पर कोविड–19 का प्रभाव

लता धुपकरिया[1]

[1]सहायक प्राध्यापक, राजनीति शास्त्र, श्री कृ.प.शासकीय महाविद्यालय, देवास (म.प्र.), भारत

ABSTRACT

वर्तमान समय में सबसे अधिक प्रसिद्धि प्राप्त महामारी कोंविड–19 जिसको निरंतर परिवर्तित हो रहे अक्रमक, विध्वंसकारी प्रभाव से दुनिया के अधिकांश राष्ट्र एवं हर वर्ग का व्यक्ति भलिभॉति परिचित है। निश्चित ही इस महामारी ने मानव जगत के हर पक्ष को प्रभावित किया है और एक राष्ट्र के समक्ष मानव जीवन को बचाने की कई चुनौतियों को प्रस्तुत किया है। पिछले 2 वर्षो से भौगोलिक एव ं आर्थिक दृष्टि से विभाजित विश्व के लगभग सभी देश चाहें वह महाशक्तियाँ दक्षिण एशियाई, दक्षिण पूर्व एशियाई, ब्रिक्स, जी–7 आदि कई आधार पर संगठित सभी राष्ट्र इस महामारी से सुरक्षा के प्रबंधन में जुटे हुए है। इस महामारी से उपजी सामाजिक दूरी की अनिवार्यता ने अंतर्राष्ट्रीय संबधों एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को देखने का, समझने का नजरिया बदला है। ऐसे समय में जब पूरी दुनिया में उथल–पुथल हो रही है। ऐसे दौर मे कोंविड–19 ने निश्चित ही भारतीय विदेश नीति पर भी प्रभाव डाला है। उक्त शोध पत्र में ऐसे ही तथ्यों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध पत्र का उद्धेश्य ऐसे तथ्यों का अध्ययन करना है, जिसने कोंविड के दौरान भारतीय विदेश नीति पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, तथा ऐसी संभावनाओं पर प्रकाश डालना है, जिसने इन परिस्थितियों को भारतीय विदेश नीति को सशक्त बनाने में एक अवसर के रूप में परिवर्तित किया है।

KEYWORDS : *विदेश नीति, कोविड–19, भारत, लुक ईस्ट, नेवरहुड फर्स्ट, एक्ट ईस्ट, सार्क, वैक्सीन डिप्लोमेसी*

प्रस्तावना

निश्चित ही कोविड–19 ने मानव जगत के हर पक्ष को प्रभावित किया है और एक राष्ट्र के समक्ष मानव जीवन को बचाने की कई चुनौतियों को प्रस्तुत किया है। पिछले 2 वर्षो से भौगोलिक एव ं आर्थिक दृष्टि से विभाजित विश्व के लगभग सभी देश चाहें वह महाशक्तियाँ दक्षिण एशियाई, दक्षिण पूर्व एशियाई, ब्रिक्स, जी–7 आदि कई आधार पर संगठित सभी राष्ट्र इस महामारी से सुरक्षा के प्रबंधन में जुटे हुए है। इस महामारी से उपजी सामाजिक दूरी की अनिवार्यता ने अंतर्राष्ट्रीय संबधों एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को देखने का, समझने का नजरिया बदला है। ऐसे समय में जब पूरी दुनिया में उथल–पुथल हो रही है। ऐसे दौर मे कोंविड–19 ने निश्चित ही भारतीय विदेश नीति पर भी प्रभाव डाला है। उक्त शोध पत्र में ऐसे ही तथ्यों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध पत्र का उद्धेश्य ऐसे तथ्यों का अध्ययन करना है, जिसने कोंविड के दौरान भारतीय विदेश नीति पर नकारात्मक प्रभाव डाला है, तथा ऐसी संभावनाओं पर प्रकाश डालना है, जिसने इन परिस्थितियों को भारतीय विदेश नीति को सशक्त बनाने में एक अवसर के रूप में परिवर्तित किया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शाधेपत्र के अंतर्गत गुणात्मक, विवरणात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है तथा तथ्यों का संकलन करने के लिये द्वितीयक स्त्रोत को माध्यम बनाया गया है, जिसके अंतर्गत विषय से संबंधित समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, लेख, बेवसाईट पर वाद–विवाद संबंधी आलेख आदि का अध्ययन कर तथ्य संकलन किया गया एवं तथ्यों का विश्लेषण कर शोध पत्र के उद्धेश्य अनुरूप अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

भारत की विदेश नीति पर कोविड–19 का प्रभाव –

भारतीय विदेश नीति पर कोविड–19 के प्रभाव को तीन भागों में विभाजित किया है–

1. कोविड–19 के पहले भारत की विदेश नीति,
2. कोविड–19 के दौरान भारत की विदेश नीति,
3. कोविड–19 के बाद भारत की विदेश नीति।

कोविड–19 के पहले भारत की विदेश नीति

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां उस राष्ट्र के एतिहासिक अनुभव, आर्थिक स्थिति, सामाजिक व्यवस्था, भौगोलिक पृष्ठभूमि वहां की संस्कृति एव ं परम्परा के आधार पर तय की जाती है। भारत ने भी अपने गणतंत्र एव ं संप्रभुता के स्वाभिमान के साथ कई सुदृढ सिद्धातों एव ं विशेषताओं के साथ अपनी विदेश नीति को गढ़ा है तथा कई सशक्त व्यक्तित्व एवं कुशल व बौद्धिक नेतृत्व की छत्रछांया में भारत की विदेश नीति कई मिश्रीत अनुभवों के साथ निरंतर आगे बढती रही है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब पहली बार भारत के प्रधानमंत्री बने अपनी विशिष्ट शैली एवं नेतृत्व से भारतीय विदेश नीति को नये आयाम दिये। जैसे–

1: Corresponding Author

• सबसे पहले पड़ोस की कूटनीति

इस दिशा में पहल करते हुए सर्वप्रथम शपथ ग्रहण समारोह में दक्षेस राष्ट्रो ं के शासनाध्यक्षों को आमंत्रित करना एवं कार्यकाल के प्रथम वर्ष में ही भूटान, नेपाल, श्रीलंका व बाग्ंलादेश और चीन की यात्रा करना। यह प्रधानमंत्री का मास्टर स्ट्रोक माना गया।

• लुक ईस्ट पॉलिसी के स्थान पर एक्ट ईस्ट पॉलिसी–

अब भारत जानने की सीमा को पार चुका है। अब उसे एक्ट ईस्ट क्रियान्यन की भूमिका में आ जाना चाहिये इस दिशा में आगे बढ़ने के लिये उन्होने कान्सेप्ट commerce (वाणिज्य), Culture (संस्कृति) और कनेक्टीविटी का Concept दिया।

अलग–अलग देशे में रह रहे भारतीय प्रवासियों को संबोधित करके देश के भावी विकास का मार्ग प्रशस्त किया। इस दौरान भारतीय विदेश नीति में जोखिम उठाने की प्रवृत्ति तथा अक्रामकता भी दिखायी दी। निर्भिक होकर धारा–370 की समाप्ति एवं पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल एवं एयर स्ट्राईक का निर्णय इसी दिशा में उठाया गया कदम था। भारत अपनी विदेश नीति के द्वारा औपचारिक समूह पर अपने राजनीतिक एवं आर्थिक हितो की पूर्ति के लिये निर्भरता को सीमित कर रहा था। ऐसे समय भारत के प्रधानमंत्री का सबसे लोकप्रिय व्यक्ति के रूप में चुना जाना निश्चित ही भारत की सशक्त विदेश नीति का परिणाम था।

कोविड के दौरान भारत की विदेश नीति–

2019 के अवसान तक भारत की विदेश नीति में नई उर्जा, उत्साह एवं आत्मविश्वास का संचार हो रहा था। लेकिन यह बढता आत्मविश्वास एवं उत्साह उस समय कमजोर पडने लगा जब 2020 के आगमन के साथ कोरोना महामारी का भारत मे ंघोषित रूप से प्रवेश हुआ। यह अद्भूत घटना ऐसे समय में घटित हुई जब सम्पूर्ण विश्व सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीक के अविष्कार की पराकाष्ठा का छू कर विकास रूपी मद से ग्रसित थे जिसे इस महामारी को मानव निर्मित किसी राष्ट्र विशेष की कूटनीतिक चाल भी माना जा रहा है। लेकिन सच यही है कि इस महामारी ने मानव जीवन को संकट में डाला है। इस वैश्विक महामारी से निश्चित ही भारत की विदेश नीति को भी परिवर्तित किया हैं।

इस दौरान बिना अपने कदम डगमगाये ं राष्ट्रीय, क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तर पर बहुत सुझ–बुझ और आत्मविश्वास के साथ सशक्त कूटनीति का प्रयोग सीमित स्वास्थ्य के साथ विशाल जनसंख्या की सुरक्षा एवं वैश्विक तथा क्षेत्रीय स्तर पर अपनी सशक्ति छवि को बनाये रखना। बड़ी चुनौतियां थी जिसे स्वीकारते हुए भारत के द्वारा कईं महत्वपूर्ण कदम उठाये गये जैसे :–

कोविड के पहले वैदेशिक संबंधों को प्रगाढ बनाने के लिये तरक्की के नये रास्ते खोलने के लिये कई देशों की यात्राएं की जा रही थी। वहीं ठीक इसके विपरीत कोविड के दौरान सबसे पहले अंतर्राष्ट्रीय उड़ाने बंद कर भारत ने जल, थल, आकाश से जुडी अपनी सभी सीमाओं को बंद कर दिया।

नेबरहडु फर्स्ट की कूटनीति

स्वास्थ्य सुरक्षा के सीमित संसाधनों के साथ विशाल जनसंख्या की रक्षा भारत के समक्ष एक बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती ने नेबरहडु फर्स्ट की कूटनीति की जगह राष्ट्र प्रथम की नीति ने ली।

वंदे भारत मिशन तथा समुद्र सेतु योजनाएं

दूसरे देशो मे फंसे अपने नागरिकों को निकालने के लिये वंदे भारत मिशन तथा समुद्र सेतु योजनाएं बनायी गयी। 7–13 मई 2020 तक 64 उड़ाने और लगभग 14,800 भारतीयों को बाहर निकाला गया। साथ ही भारत ने एक साप्ताहित टेलीफोन कॉल के माध्यम से इंडो पैसिफिक देशो के साथ महामारी का मुकाबला करने के लिये उठाये गये कदमों को साझा किया गया।

आत्मनिर्भर भारत

कोविड के दौरान आत्मनिर्भर भारत की नीति ने भारत को सम्पूर्ण विश्व में आकर्षण केन्द्र बनाया है। कोरोना की पहली लहर के समय जब भारत मास्क, पीपीई कीट, हेडकवर, कोरोना टेस्ट तकनीक जैसी स्वास्थ्य सुविधा के लिये दूसरे देशों पर निर्भर था तथा वैक्सीन निर्माण को लेकर जहां अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे थे। वहीं भारत भी शीघ्र वैक्सीन का उत्पादन करने लगा तथा वैक्सीन आयात से वैक्सीन निर्यातक की भूमिका निभाने लगा।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य कूटनीति

कोविड के दौरान यह भारती विदेश नीति का आधार साबित हुई समय की नजाकत को भापते हुए सही समय पर भारत ने इस नीति को अपनाया जिसके तहत 60 से अधिक देशों को उनकी मांग के अनुरूप मलेरिया रोधी दवा हाइड्रोक्सीक्लोरोविन और पैरासेटामाल की आपूर्ति की गयी। मलेशिया, मालदीव, श्रीलंका, म्यामांर, मॉरिशस एवं स्वास्थ्य सामग्री सर्जिकल मास्क , हेंड कवर आदि भेजे गये भारत के द्वारा सार्क देशो को 1.7 मिलियान डॉलर की राहत सामग्री वितरित की गयी।

अन्य देशों के मेडिकल कर्मचारियों को ऑनलाईन प्रशिक्षण

भारत के मेडिकल कर्मचारियों के द्वारा सार्क व अन्य देशों को ऑनलाईन प्रशिक्षण दिया गया ताकि ये अपने यहां स्वास्थ्य संबधी क्षमताओं को विकसित कर सके। भारतीय सेना के डॉक्टरों को नेपाल, मालदीव और कुवैत जैसे देशों में भेजा गया। कोविड से रक्षा के लिये निर्मित वेक्सिन का पेटेंट प्राप्त करने के लिये WTO से वार्ता मे ंभारत सक्रियता के साथ भागीदारी करता रहा।

वैक्सीन मैत्री

इस कार्यक्रम के तहत भारत के द्वारा अप्रेल 2021 तक 95 देशों को 66 मिलियन से अधिक खुराक का निर्यात किया जा चुका था। जहां एक ओर भारत कोरोना से जंग लड रहा था वहीं अपनी सीमा पर चीन की नापाक हरकतो ं का भी दृढता से जवाब दे रहा था। कोविड के दौरान भारत की सशक्त विदेश नीति का ही परिमाण था जिसके कई सकारात्मक पक्ष देखे जा सकते है जैसे–

अ. रिजर्व बैंक अगस्त 2021 की रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक देश का फार्मा कारोबार 3 गुना से भी अधिक हो जायेगा। भारत इस समय 50 प्रतिशत वैकसीन की वैश्विक मांग की आपूर्ति कर रहा था। भारत जेनेटिक दवाओं का भी दुनिया में सबसे बडा निर्यातक देश है।

ब. कोविड– 19 के दौरान भारतीय कूटनीति ने वैश्विक विमर्श को अपना माध्यम बनाया। क्षेत्रीय स्तर पर भारत ऐसा देश था जिसने इस क्षेत्र में 1 करोड़ डॉलर का सार्क कोविड–19 आपातकालीन कोष स्थापित करने का प्रस्ताव रखा।

स. इस दौरान भारत दुनिया का सबसे बडा मददगार देश बनकर उभरा है WTO ने यह बात स्वीकारते हुए भारत की सराहना की है।

द. जून 2021 जी–7 सम्मेलन में वर्चुअल भाग लेते हुए "वन अर्थ वन हेल्थ" का मंत्र देकर पश्चिम के साथ बढ़ती सहभागिता का नया आयाम दिया है।

य. कोविड के दौर में UNO को सुरक्षा परिषद में दो वर्ष के लिये अस्थायी सदस्य के तौर पर आठवीं बार चुना जाना, भारत की वैश्विक शक्ति की ओर संकेत है।

कुछ दिनो पहले संयुक्त राष्ट्र सामाजिक एवं आर्थिक आयागे द्वारा प्रकाशित डिजिटल एवं टिकाऊ व्यापार सुविधा वैश्विक सर्वेक्षण रिपार्टे 2021 मे भारत को 90.3 प्रतिशत की रैंकिंग मिली है जो फ्रांस, नार्वे, ब्रिटेन कनाडा की तुलना में अधिक थी।

कोविड–19 के दौरान भारत की सशक्त विदेश नीति का ही परिणाम है, कि जब फरवरी 2021 में भारत एवं कनाडा के प्रधानमंत्री के बीच वार्ता हुई तो, जस्टीन टूडो ने भारत से वैक्सीन मांगने की मंशा जाहिर की और भारत ने भी पूरी तरह मदद का भरोसा दिलाया। टूडो ने कहा अगर कोविड–19 के खिलाफ दुनिया जीत हांसिल करती है तो उसमें भारत की अभूतपूर्व औषधीय क्षमता का महत्वपूर्ण योगदान होगा।

ये घटनाएं भारत के प्रति विश्व के देशो का बढते विश्वास का ही परिणाम है। लेकिन कोविड के दौरान कोरोना की दूसरी लहर की चुनौती ने अपनी कुशल विदेश नीति के द्वारा निर्मित विश्व के बड़े मददगार एवं अपने पड़ोसी देशो के हमदर्द के रूप में निर्मित भारत की छबी को आघात पहुंचाया है। जहां एक ओर लाशों को नदियों में बहाने की तस्वीर सामने आयी तथा वैक्सीन निर्यात पर प्रतिबंध पर भारत के फैसले से वैक्सीन मैत्री कूटनीति कमजोर पड़ी। देश में 18 + वैक्सीन के बाद से भारत वैक्सीन आयातक से निर्यातक देश बन गया अपनी 16 साल पुरानी नीति में परिवर्तन कर दूसरी लहर के प्रकोप के कारण भारत ने किसी भी देश से सहायता स्वीकार करने का मन बना लिया। अमेरिका, जापान, रूस, ब्रिटेन जर्मनी, भूटान, बाग्लादेश जैसे 40 देश आगे आये। जिसका कारण दूसरी लहर का अनुमान लगाने में भारत की विफलता, वैक्सीन मैत्री कार्यक्रम शुरूआत करने में जल्दबाजी, ऑक्सीजन उत्पादन बढ़ाने में अक्षमता है। निश्चित ही कोरोना की दूसरी लहर ने भारत की नीति को कई स्तर पर चुनौतियां दी है। लेकिन इन चुनौतियों ने कई सीख भी दी है। भारतीय विदेश नीति की धार को बल मिला है। पहले भारत स्वयं को सीमित क्षमता वाला देश मानता था जो संवाद को दिशा देने में समर्थ नहीं था लेकिन कोविड के दौरान भारत की विदेश नीति में अन्य देशों से संवाद बढाने की ये नई धार आयी हैं जिसके जरिए भारत वैश्विक भागीदार के तौर पर स्वयं को प्रस्तुत कर रहा है। जिस तरह से हर दौर गुजर जाता है। सिर्फ इतिहास के पन्नो पर घटनाएं तारीख बनकर रह जाती है। ठीक उसी प्रकार से यह दौर भी निकल जायेगा। लेकिन ये परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य भारतीय विदेश नीति को भी नये तरीके से स्वयं को प्रस्तुत करने के लिये छोड़ जोयगा।

कोविड–19 के बाद भारत एशिया में अपनी पैठ बढाने का प्रयास करेगा, जिसके लिये भारत के पास कई कारण है। भारत की निष्पक्ष चुनाव प्रणाली की विश्वसनीयता एवं हमारे तकनीकी रूप से शिक्षित और प्रशिक्षित युवा राष्ट्रीयकरण को बढावा मिलेगा तथा सूचना का वैश्वीकरण बढेंगे। इसके अनुरूप भारतीय विदेश नीति निर्धारित होगी।

कोविड–19 के कारण उपजी घरेलू समस्या आर्थिक संकट, बेरोजगारी बढ़ती मंहगाई जैसी चुनौतियों के साथ बदले अंतर्राष्ट्रीय हालात के साथ पुनः नई उर्जा साथ भारत को स्वयं को सृजित समायोजित करना होगा। क्वाड ऐसा अवसर है जिससे भारत सशक्त राष्ट्र के रूप में उभर सकता है। कोविड के बाद भारतीय विदेश नीति की तैयारी का आगाज क्वाड के माध्यम से हो चुका।

निष्कर्ष

भारत ने अंतर्राष्ट्रीय परिवेश के अनुरूप अपनी विदेश नीति को सशक्त बनाया है। जब दुनिया पूजीवाद और साम्यवाद के मध्य प्रतिस्पर्धा कर रही थी तब भारत ने गुटनिरपेरक्षता को भारत की विदेश नीति का आधार स्तंभ बनाकर अपनी बौद्धिकता का परिचय दिया। जब दुनिया परमाणु हथियारों का भण्डार तैयार कर रही थी तब भारत ने भी सुरक्षा की दृष्टि से परमाणु परीक्षण कर यह साबित किया कि वह परमाणु उर्जा में भी सक्षम है। जब विश्व की अर्थव्यवस्था LPG की अवधारणा के साथ आगे बढ़ रही थी तब भारत ने भी LPG को अपनाकर अंतर्राष्ट्रीय जगत मे आर्थिक प्रगति कर अपनी सूझबूझ का परिचय दिया। जब दुनिया 4G, 5G की जनरेशन तक पहुंच गयी भारत ने भी 5 जी की तैयारी कर ली है। कोरोना के बाद हर देश स्वयं को स्वास्थ्य संबंधी साधनों व वैक्सीन निर्माण के माध्यम शक्ति के प्रदर्शन की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए हैं। जब भारत ने भी वैक्सीन का निर्माण कर स्वयं की काविलीयत को साबित किया । भारत की विदेश नीति हर वैश्विक परिवर्तन के अनुरूप अपने राष्ट्रीय हित व सम्प्रभुता की रक्षा करते हुए हर मोर्चे पर एक कुशल विदेश नीति का परिचय दे रही है।

REFERENCES

खुराना, गुरप्रीत एस (2007) सिक्योरिटी आफ सी लाइन्सः प्रास्पेक्टस फार इण्डिया–जापान कोआपरेशन, स्ट्रेटजिक एनालिसिस, आईडीएसए, जनवरी 31(1)

द्विवेदी, अविनाश (2021) कोरोना की दूसरी लहर से कमजोर हुई भारत की विदेश नीति, https://www.dw.com/hi/how-covid-second-wave-affected-indian-foreign-policy/a-57906927

कियोहेन, आर ओ (1984) आफटर हेगमोनी,: कोआपरेशन एण्ड डिसार्डर इन दी वर्ल्ड पालिटिकल, प्रिंसटन , प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस

https://www.amarujala.com/world/india-economic-and-foreign-policy-is-being-praised-in-unga

पंत, हर्ष वी (2020) कोविड–19 के दौर में भारत की कूटनीति, https://www.orfonline.org/hindi/research/indian-diplomacy-during-the-epidemic-of-covid-19-65683/

पैन, सी (2014) दी इण्डो–पैसिफिक एण्ड जिओ पालिटिकल ऐंजाइटीज अबाउट चाइनाज राइज इन दी एशियन रीजनल आर्डर, आस्ट्रेलियन जर्नल आफ इण्टरनेशनल अफेयर्स, 68(4)

राव, निरूपमा (2013) अमेरिकाज एशियन पिवोट, दी व्यू फ्राम इण्डिया,